



66

कैलाशमां वर सखा यद्दीनं यद्गव
नंजी कनकं वर सखा यद्दीनं यद्गव

सुखं सखे वर सखा यद्दीनं यद्गव
कीर्तिमां वर सखा यद्दीनं यद्गव
सैकं यद्दीनं यद्गव
नंजी कनकं वर सखा यद्दीनं यद्गव

नायस्वस्ति स्वाहा ॥ ॥ सूत्रान् ॥ कलसथियक ॥ ॥ थूमि
द्वादसकलसन्धासविधिज्ञा ॥ ॥ थन ॥ मात्रसादसक
इयुजा ॥ ॥

थन ॥ नागार्पण ॥ धूय ॥ जाय ॥ निराजन ॥ ॥ थन ॥ व
धमान ॥ ॐ नमः ॥ धूलरुकात्रनत्रनस्यत्वनत्रावनासमयुन

॥ वेत्रावनमनहनाम्यहंसरुलवज्रवनून ॥ स्यगवन ॥ सफ
हना ॥ दधिनकयदवनासायकल ॥ वास्यनवनात्रिगात्रा ॥ ना
गायाम ॥ समूदप्रतिवाल्समयसह ॥ याद्यादियूर्यन्यास ॥
ॐ वनूनायवज्रयूयायगिह्र स्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तयुजा ॥ चित्त
वड ॥ द्वाहास्वान ॥ धूयः ॥ उमहा ॥ रुगः ॥ धरि ॥ धातुसंय ॥ रुता न

नागार्पणयुजायाय

किंगन ॥ उंजनाधिवतिनागनाशास्वधुविवनादिः वनूनायनकुरुते
१ ॥ थनपूषुध्वान ॥ उंयुध्वनंतायनागनाशान्तरितं वज्रमसं
दिसमाकसत्राचिह्नमद्धानं विरावी ॥ ॥ याद्यादियुध्वन्यास ॥ उं अं
नगायवज्रयुध्वनः यतिरुखाहा ॥ ३ ॥ यं वायुहानयुजा ॥ विः अं अं
॥ अरात्रागिखान ॥ धूपः धूग ॥ रुगः धन ॥ रुना ॥ कत ॥ उं नम

अनंतायवुधादिनावादियंगिरुनाछादित अनंतनागनमकुरुते ॥
२ ॥ थनः दधिनसः ध्वान ॥ उं दधिनदलेयुमनाग ॥ कूं दूं दूं संका
सग्धावस्यनाधिगस्यधंरावत ॥ याद्यादियुध्वन्यास ॥ उं यं यस्मायव
जययुगिरुखाहा ॥ ३ ॥ यं वायुहानयुजा ॥ विः ॥ अं ॥ कत ॥ रु
॥ धूपः सिति ॥ रुग ॥ कति ॥ रुना ॥ कित ॥ उं नम यस्मायव

पुनः यज्ञावादि यः यं च रुनाद्वादि तं यमनागतमामिहं । ३
थनः वल्लिमसध्यानं । उं नम यल्लिमवृयं तक्रकाय तक्रवर्णशिव
कुकितासिलविस्वहं ताचनं । याद्यादिपूर्यन्मास । उं नं तक्रकायवत्त
पूर्यः यनि छसाहा ॥ ३ ॥ वि तक्रवन्दन । त्रिगहं नखा । धूपः कस्तूर
॥ रुग्ः श्रितज्ञा । रुनाडु । किन । उं नम तक्रकायवृषीपूर्यज्ञावादि यं

नच रुनाद्वादि तं तक्रकं नमस्कृतं । ४ ॥ थनः उं नमसध्यानं । उं उं
लवासु किनागताज्ञाः विनवर्णकृगसुतां त्रिगहं विनाचनं । याद्यादि
पूर्यन्मास । उं वां वासुकिर्यवत्तपूर्यः यनि छसाहा ॥ ३ ॥ यं वाप्रहात
यज्ञा ॥ रुग्ः वन्दनं चित् । अतिस्तन । धूपः कस्तूर । रुग्ः साधन ।
किन । उं नम वासुकिनागमवृषीपूर्यज्ञावादि यं वासुकिनमामिहं

॥ थनः ००० मानसध्यान ॥ ॐ ००० मानसध्यानमहयर्मनागमद्विकनकव
ल्लुतिस्त्राज्ञितविराचन ॥ याद्यास्त्रानवाय ॥ ॐ मां माहायुमायव
पूर्यः यतिस्त्राज्ञा ॥ ३ ॥ यैवायकात्रयज्ञा ॥ चिः कुं कुम ॥ तद्वासा ॥
धूपः ॥ ग्राधं द ॥ रुग्ः ॥ लायूहाम ॥ रुग्ः ॥ कितन ॥ ॐ नममाहायमा
यवुवांयुयज्ञावादिद्यसकहनाञ्जादिन ॥ माहायर्मनमासिह ॥ ३

॥ थनः ॥ अग्निसध्यान ॥ ॐ अग्निसध्यानमहयर्मनागमद्विकनकव
ल्लुतिस्त्राज्ञितविराचन ॥ याद्यादियुपंत्यास ॥ ॐ मां माहायुमायव
पूर्यः यतिस्त्राज्ञा ॥ ३ ॥ यैवायकात्रयज्ञा ॥ चिः ॥ त्रकुर्वन्दन ॥ कुतसा ॥ धूप
नकि ॥ रुग्ः ॥ इइ ॥ रुना ॥ ॐ नमसस्त्रयात्रायववांयज्ञावादिद्य
नुकादसरुनाञ्जादिन ॥ सस्त्रयात्रायनमरुक्त ॥ ७ ॥ थनः ॥ नृप ॥

ध्यान ॥ उं नमि त्र्यकुको गकाय नाग राजा धवन वल्किलं बांकु ग
विता वान् ॥ पाद्यादिपूर्यन्त्याम ॥ उं कुककु गकाय वज्रयूर्य ॥ निष्क
हा ॥ ३ ॥ येनोपहारायज्ञा ॥ वि ॥ ग्राह्य ॥ समिचयास्वान् ॥ धूय
अंग ॥ रुग्गु निवा ॥ रुना ॥ किं न ॥ उं नम ककुको गकाय वुवा
ययज्ञां वादिपूर्य च रुना दितं ॥ ककुको नममिहं ॥ १ ॥ धन ॥

वायुचाम ध्यान ॥ उं वायुचक्रनिकनाग राजा धित ॥ नकु ॥ विचित्र
वदना ॥ अर्धचन्द्रा कितकं धवन ता वान् ॥ पाद्यादिपूर्यन्त्याम ॥ उं
कुं कुनिकाय वज्रयूर्य ॥ यनिष्क स्वाहा ॥ ३ ॥ चित ॥ ककुत्रि ॥ स्वा
सकगां ॥ धूय ॥ गधवन ॥ रुग्गु ॥ रुना ॥ किं न ॥
॥ उं नम कुनी काय वुवां ययज्ञा वादिपूर्य नवरुना दितं ॥ कुलि

कायनमामिहं ॥ ८ ॥ थननागावनिविय ॥ उंगुतमंतुलं ॥ ००
रुगावादिथ अगन्य ॥ नैत्रिल ॥ वायुव्य ॥ पूर्ववदिम ॥ उक्त ॥ दधित
मानिक्रु ॥ धुसिक्रु ॥ पूर्वदिथयुगला ॥ ०० ॥ देवनिगट ॥ शसर्वसा
निक्रु ॥ ह्रैरु ॥ स्वाहा ॥ ॥ समय ॥ मतविय ॥ पुनायाय ॥ नागधूय
थस्य ॥ त्रिचक्रय ॥ अरुतिविय ॥ यत्रिवारपूजा ॥ देवनिवनिधि

य ॥ गगमानस्वानननके ॥ गत्रपूजा ॥ देवना ॥ क्रमायन ॥ थन
पूजाय ॥ ॥ उवदूनादिअरुक्रमनागसुधिनारावादिद्यत्रव
लिपूनअरुगुवाहुरनागसधियुक्त ह्रैरु ह्रैरु ह्रैरु स्वाहा ॥
नागमंतुनपूजाविममाक ॥ ॥ ॥

॥ १५४ ॥ सो व से ॥

॥ १५५ ॥

गुरुशुद्धा धां दं डरुत धाव ॥ २३ ॥ गामला प व व्यापु प्रतिमला
सागुके सडा धि मे गारु डीती ॥ २४ ॥ रूसी न ०० शुनी पो वे शु यु मे
त धाव ॥ २५ ॥ त्वाति पा धर ड का या व चा कु स व ना व ॥ २६ ॥ यु मे त न
ड वाव ॥ २७ ॥ मि सा नु के ॥ २८ ॥ य व व स म रु य म रु व य या ड र सा ॥ २९ ॥
२३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥
ल ना म सा दा ॥ ४१ ॥ यु मे ग धा व न न व क पा व य ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥
मालि ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
धा व ड ॥ ७१ ॥ मि र वा स व ति व व पा व य मं ग ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥

॥ १५५ ॥
मिरवापा
यय ॥

पधि ॥ १५६ ॥ सि धि नि ॥ १५७ ॥ मान व स गू वा मा ल ॥ १५८ ॥
१५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥
ध प्र ३ वि पा द्मा सः प स ना य ॥ १८१ ॥ खा व सः वा नु ल ल गू ड व ड
म रु व ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥
न ना ला य ना श्रु म व ना डा ॥ २०१ ॥ यु मे १ ॥ २०२ ॥ २०३ ॥ २०४ ॥ २०५ ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ २०८ ॥ २०९ ॥ २१० ॥ २११ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ २१४ ॥ २१५ ॥ २१६ ॥ २१७ ॥ २१८ ॥ २१९ ॥ २२० ॥
प स नि वि प्र ना र ट दू य मं ग ॥ २२१ ॥ २२२ ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ २२५ ॥ २२६ ॥ २२७ ॥ २२८ ॥ २२९ ॥ २३० ॥ २३१ ॥ २३२ ॥ २३३ ॥ २३४ ॥ २३५ ॥ २३६ ॥ २३७ ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥
१२ व ॥ २४१ ॥ २४२ ॥ २४३ ॥ २४४ ॥ २४५ ॥ २४६ ॥ २४७ ॥ २४८ ॥ २४९ ॥ २५० ॥ २५१ ॥ २५२ ॥ २५३ ॥ २५४ ॥ २५५ ॥ २५६ ॥ २५७ ॥ २५८ ॥ २५९ ॥ २६० ॥ २६१ ॥ २६२ ॥ २६३ ॥ २६४ ॥ २६५ ॥ २६६ ॥ २६७ ॥ २६८ ॥ २६९ ॥ २७० ॥

॥ १५५ ॥
मिरवापा
यय ॥

[illegible]

अवः पं काल प्रा दो पात प्रा च न क्र आता व य म म मा थ स
 पु व ना न दु यः डा क्र न म न केः स को नां वा ठ म रु व ॥ स
 रु इ न सां थु व म् क ता क पु र्मा ग म मा तः आ रु व ५ न
 थ म म म मी क्र इ साः स्त्रा के इः न सा यं द्रु ग मा व ना म न
 मः स्त्रा म ना इ न सा म सि क ता त म स ड क स न का च न म ग
 ता व सि मि वः थु म स्म त र्मु के न म त नः के न ड स सा ग

॥ सु. ४ वख

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गीता गन्धर्व ॥ यनमो ॥ ० ॥ ददादिदव मुक्ति
संय दं ॥ ० ॥ ॐ नमो

ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ मा न पा शुभं सः ॥ क्ष म्नु नु ॥ ३ ॥ ॥ सि वि प्र म
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥
॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः

ॐ ह्रीं श्रीगणेशाय नमः

किं निदावमापूयन्वाथसुमं॥ ॥ ॐ सिधुसलुगिना
नवकुमालिः वरुणगिरि। हरे ८ स्वाहाः धमत्रा शिवा प्रकृष
मिसाति ८ कः वसु २ ग १० ॥

मिस्त ॥ १८ कः ॥ २५

ॐ नमः शिवाय ॥ ० ॥ धन ॥ सनातन ॥ यज्ञ ॥

॥ ॐ स्वरावसुधा ॥ सकृद्विष्णोस्वरावसुधा ॥ ॐ
निर्दिष्टकात्रयलिनन ॥ नानात्रलमयकल ॥ अश्व
कावसुधा ॥ नरक ॥ नद्वलिनिर्मितायत्रि
विस्वककनिका ॥ ॐ कात्रयवसुधि

रसनाकसन्ध्या ॥

कवशासन ॥ वसुधावसुधा ॥ सूर्ययरा ॥ मूल
पंचवृद्धत्रलमकृतमंदिनकृताविजयिनविजय
विजयलिनरुतनामवधल ॥ शानुत्रयसिन ॥ विन
प्रकृत ॥ रुतिन ॥ वसुधा ॥ स्वतन्त्र ॥ प्रथमाश्या
सवसुधा ॥ शानुत्रयसिन ॥ विन

क्रवर्तुः चतुर्थास्यासुतयायधनं ॥ रगवर्तुः क्रगगुर्तुः ॥
ग्रावर्तुः वाचनविज्ञाया ॥ खड्गद्विगुमयूरवां क्रुर्धर्तुः नमस्तु
मानिययुतताइक्रायाद्याचमनादिकंदत्वा ॥ नष्टसमयस
त्यप्रवृत्तम् ॥ महात्रागानद्रविरुय ॥ वाधिविनत्रयाम्
निरुनचिनयन् ॥ चिह्नवसमयदवना ॥ स्नानदवना

यकिरुनचिनयन् ॥ नतावक्रागुक्रयुष्मासात्राकं ॥ यं
चसुर्गं वाप्रद्यं क्वासहिर्न ॥ वाप्रमृष्टिनागृहित्वा ॥ ॐ
सर्वेनथागनमहायाग्राखरहं ॥ ॥ यनः ००० मानस
॥ वक्रथिय ॥ ॐ वक्रयक्रहं ३ ॥ ॥ काय ॥ ॐ वक्रधक्रहं
१०८ ॥ पूषान्याम् ॥ ॐ महाध्वनावनानमस्वाहा ॥

हाविलं वज्रसत्त्व नमामिहं ॥ वज्रराजमहात्राग ॥ व
ज्रसूत्रं नमनमा ॥ ॥ वरि ॥ अकमूय ॥ ॥ थन ॥
दधिनस ॥ वज्रथिय ॥ उं वज्रयं कुरु ॥ ज्ञाय ॥ उं नलव
जिग्रा ॥ अकयन ॥ खानवाय ॥ ॥ उं नलसं रावाय
नमस्वाहा ॥ उं वज्रनलाय नमस्वाहा ॥ उं वज्रने ज्ञाय नम

स्वाहा ॥ उं वज्रकं नवं नमस्वाहा ॥ उं वज्रहा साय नमस्वा
हा ॥ ॥ यं वायुला वृजा कृति ॥ ॥ उं भ्रात्रलसं राव
वृष ॥ वज्रनल नमामिहं ॥ वज्रने नमो कं नु वज्रहा सं नम
मिहं ॥ वरि ॥ थन ॥ वल्लिमयात ॥ अं कं यं न ॥ वज्रन
थिय ॥ उं वज्रयं कुरु ॥ ज्ञाय ॥ उं धर्मवजिह्री ॥ अक

वन ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ॐ अग्निनाशायनमस्वाहा ॥ ॐ वक्
मन्ननमस्वाहा ॥ ॐ वज्रनिष्कायनमस्वाहा ॥ ॐ वज्रहं न
वनमस्वाहा ॥ ॐ वज्रतावायनमस्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तान
युक्तानुति ॥ ॥ ॐ अग्निनाशमहावृद्धं वज्रधर्मनमाहा
हं ॥ वज्रनिष्कं महाहिं दुः वज्रतावनमाम्याहं ॥ ॥ वज्रि

श्रुतामूख ॥ ॥ यनः ॥ ॐ वज्रयात ॥ वज्रनधिय ॥ ॐ
वज्रयं कुरु ॥ जाय ॥ कर्मवज्रि ॥ ॥ आकवन ॥
स्नानवाय ॥ अमृद्यमिद्वियनमस्वाहा ॥ ॐ वज्रकर्मो
यनमस्वाहा ॥ ॐ वज्रनकायनमस्वाहा ॥ ॐ वज्रयं काय
नमस्वाहा ॥ ॐ वज्रसंक्षयनमस्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तान

यूजा नृनि ॥ ॥ उं अमाद्यसिद्धि वृत्तं ॥ वज्रकर्मनताम्यहं
॥ वज्रत्रयं वज्रयत्रं वज्रसंधिनताम्यहं ॥ वज्रधाम्नामहं
वाधिसर्वविघ्नविनाशकं ॥ सर्वसिद्धिस्वर्णनताम्यहं ॥
वत्रि ॥ अकात्रमुख ॥ ॥ थन ॥ अग्न्याह ॥ वज्र
थिय ॥ उं वज्रयत्रं ॥ जाय ॥ उं वज्राहं ॥ अकवन

॥ स्वानवाय ॥ ॥ उं वज्राहं नमस्वाहा ॥ उं वज्राहं
यनमस्वाहा ॥ उं वज्रगानाय नमस्वाहा ॥ उं वज्रनृयाय
नमस्वाहा ॥ उं वज्रधूयाय नमस्वाहा ॥ उं वज्रयूयाय न
मस्वाहा ॥ उं वज्रगंधाय नमस्वाहा ॥ ॥ यंधाय नमः
ज्ञानेनि ॥ ॥ उं वज्राहं माहा मात्रं वज्रगानां नमाम्

ॐ ॥ वरुन न धू ध वरु वरु यूर्य नमाम्यहं ॥ वरुदियामा
ह्नादिया वरुगं धी नमाम्यहं ॥ ॥ वरि ॥ श्रुका नमूय ॥
॥ थन ॥ वायूयस ॥ वरु थिय ॥ ॐ वरुय नूहं ॥ जा
य ॥ ॥ श्रुकवन ॥ स्या नवाय ॥ ॥ ॐ भ
गिय नमस्वाहा ॥ ॐ श्रुमद्यदसि न नमस्वाहा ॥ ॐ सर्वयाय

नमस्वाहा ॥ ॐ सर्वस्वक नमानिद्या न नमति न नमस्वाहा
॥ ॐ गय हनि न नमस्वाहा ॥ ॐ सुनं गमाय नमस्वाहा ॥
ॐ गगन गं शाय नमस्वाहा ॥ ॐ ह्ना न क न व नमस्वाहा ॥
॥ ॐ श्रुम तपुशाय नमस्वाहा ॥ ॐ वन्द्यपुशाय नमस्वाहा
॥ ॐ श्रुतिनिपुशाय नमस्वाहा ॥ ॐ वरु गराय नमस्वाहा

ॐ अक्रयमतिननमस्वाहा ॥ ॐ पुनिरानक्रनायनमस्वा
हा ॥ ॐ सैमग्रदायनमस्वाहा ॥ ॥ यं वायुहा नयूका
नुति ॥ ॥ ॐ भूत्रियचमहा इकं सवायायऊई नमः ॥
सर्वस्वकं नमो दानं गन्ध हस्ति सदानम्य ॥ सुलंगमख
ननं बह्म नकं नमामिह ॥ अम नयुरामहा नं ऊं चड

पुनं नमामह ॥ रुदवा रं लाकयार्त स्वका त्रिनिपु रं नमा
म्यह ॥ वज्रगंत धर्मगार सदा क्रयं माननमनमः ॥ आयु
निरानक्रडं च समसु रा दुकं नमनमः ॥ ॥ वत्रि ॥ अ
काम्य ॥ ॥ नं ऊं नं स ॥ वज्रथिय ॥ ॐ वक्रयक्रुई
३ ॥ जाय ॥ ॐ वज्रां क्रुस ॥ ॥ अशकवन ॥ खानवाय

॥ ॐ वज्रा क्रमायनमस्वाहा ॥ ॐ वज्र वासायनयनस्वाहा ॥
ॐ वज्र ह्रीं नायनमस्वाहा ॥ ॐ वज्र वासायनमस्वाहा ॥ ॐ
॥ ववा प्रहात्रयूका नृनि ॥ ॥ ॐ वजा क्रमं माहा काध
वज्र वासनमा म्याहं ॥ वज्र द्वागं माहा विलं ॥ वज्र वसनम
सदा ॥ ॥ वत्रि ॥ ज्जकार मूय ॥ ॥ यन ॥ मध्यम यिग

वज्र ॥ वज्र नथिय ॥ ॐ वज्र यक्रहं ॥ जाय ॥ मूनं रमूनि
यस्वाहा ॥ ॥ ज्जक वन ॥ खानवाय ॥ ॥ ॐ वूडा यमा
कमूनियस्वाहा ॥ ॐ ज्जक्रा त्यायनमस्वाहा ॥ ॐ तनमं र
वायनमस्वाहा ॥ ज्जग नातायनमस्वाहा ॥ ॐ ज्जमां द्यमि
धियनमस्वाहा ॥ त्रावनयनमस्वाहा ॥ मामकियनमस्वा

ॐ ॥ ब्राह्मणेन नमस्वाहा ॥ आर्यानामार्थ नमस्वाहा ॥
यं वा प्रहायूनादनि ॥ ॥ उं रागुमालं वलं न निजि
नं राव पुनमा म्हाः निवानयनमा नृद्धं त्वं वृद्धं यनमा
म्हा ॥ ॥ वत्रि ॥ अकारमूष ॥ ॥ रुमावन ॥ ०
ॐ ॥ दादस्य कुरु स्वाय ॥ ० ॥ यवस ॥ मध्यस ॥ महार्धना

वन ॥ अम्वरु ॥ ० ॥ रुवस ॥ निरवुज ॥ खवस ॥ अकुस ॥ ०
दधितस ॥ मध्यस ॥ रत्न ॥ रुवस ॥ वृजगामा ॥ वरुद्धय ॥ खवस
॥ दास ॥ ० ॥ यक्षिमस ॥ मध्यस ॥ यमी ॥ रुवस ॥ सिखत्रमान
॥ खवस ॥ धूयदह ॥ ० ॥ उगुत्रस ॥ मध्यस ॥ विखवज ॥ रुव
स ॥ द्यंक ॥ खवस ॥ दगुरुज ॥ ० ॥ मात्रस ॥ सिवसकति

ॐ ॥ दादस्य कुरु स्वाय ॥ ० ॥ यवस ॥ मध्यस ॥ महार्धना



कलस ॥ यल्लेखान ॥ उद्धार ॥ विन ॥ मारसा ॥ शोकदा
 नचिने ॥ युधि ॥ सज ॥ बन्द ॥ खत्र ॥ नाग ॥ वृद्धि वि ॥
 श्री ॥ द्वादशकनसन्व्यास ॥ ध्यानयाय ॥ पूर्ववैशाचन ॥ उं स
 तावसुधा ॥ सर्वधर्मा ॥ स्वतावसु ॥ अह ॥ नितिवकात्रवत्रि
 नं वनातान्नमयकर ॥ स्याकोत्रजसुकधमादयानदकं सुक
 र्वचसुचिकवत्राक ॥ नद्वयत्रिहि विस्तारक कलि कायाव ॥

द्वादशकनसन्व्यास ॥

मन्द ॥ उकात्रज नवसुचिकवत्र स्यानवत्रययक ॥ नित्य ॥ सु
 ग ॥ ब ॥ सूर्ययसं ससु नयववृषत्र नमकुनमदिगत्रनाविगुवि
 नविविगुत्र द्वा सत्रनावत्र धनसागु नयसिन ॥ विन ॥ नक ॥ रुत्रि
 नचनसु व ॥ अरु रुद्र ॥ यथमास्या सवत्र वा धागासडा धन ॥ अ
 यत्रास्या ध्यानसडा धन ॥ नितियास्या अरु मात्रा चक्रधन ॥ वक्रथ
 स्यासत्रवायधन ॥ सगवर्ग रगऊ पूर्वत्रावन विशाख ॥ सहदि

नमयूखाकमं हानाकस्य ह्यनमन्वमानियः, यूनगाह्यायावमनादि
कंदत्वाकचसमयसत्त्व ॥ युवस्यमाहारागादविरुपवाधिवित्तव्यामि
नीः ह्यनविमयः चिह्नवसमयदेवताह्यानदेवनायै किरुनवित्त
यनगा ॥ वजासकयूष्यमात्रान्कयवसुर्गुविचिगुवामद्यन्कासहि
नः वामसूनिनागहिन्वा ॥ ॥ उमर्धनथागतमहायागास्यनहं ॥
ॐ निवक्रसस्यहिदयमनेनप्रकक्षहिमंगुस्य ॥ ॥ उं वज्रयक्र

हं ॥ ॐ नि सावकमिकमंकनवनिष्कहिन्व ॥ यूनवज्रथिय ॥
उं वज्रयक्रमंकनवनिष्कहिन्वनिषिद्या ॥ ॥ यूर्यन्यास
॥ उं वज्रधनुर्हं ॥ १०८ ॥ यवापुहारायूजागुनि ॥ ॥ कंतन
॥ उं सर्वयायिरवागस्यसूनाधियनं जिनं नुं धनुकमाहाराज
वैनाचननमानुक्त ॥ ॥ नगावत्रि ॥ सावकमिकनसवालिन
यूक्त ॥ सनाकृत ॥ यमकसायन ॥ यवमा ॐ नि गथया ना

गौविषययै न ॥ ॐ नि वक्रु सर्वत्रावनम ॥ १ ॥ पूर्वम् ॥ अक्ष
रं ॥ ॥ ॐ नमो ३ क्रा शं स्य ज मि नु त्या दि ॥ नि नय च सु चिक व
जा क न स्य वि नः गं ज न्दा य त्रि वि स्था क्रु म् वि न्द्रु ई का न वि न्द्रु नि
नय च सु चिक व ज स र्द गं व ज य र्य क नि य ॥ सु यै प्र रं दि रु कं य
क म् सु खं म वा ग ल्या नि नय च सु चिक व जं धृ त्वा रु श्य म् डा ध र्त्वं ॥
वाम रु रु म् कान म् सं ग रु वि नं सु न य च व द्ध म् कृ त म् दि न रु

ना वि न यि नं वि चि त र त्ना रु त ना व त्र ध र्त्वं : व ज स र्द अ क्रा र्त्वं वि
ला य ॥ सु रु दि जं दि व द्ध न ॥ ॥ अ क म न ॥ या दा ॥ पु र्य न्या स
॥ स्ना न वा ॥ ॥ ॐ व ज स र्द ई ३ न ना पु र्य न्या स ॥ य वा य नु ति
० ॥ कें न न ॥ ॐ न म नं व ज स र्द य स र्द य स र्द क ॥ अ ग ना ना
स य रु द्ध अ क्रा त्या य न म रु नं ॥ ॥ न ना व त्रि ॥ स र्व पु र्व न ॥ २
रु वि ॥ न ना व त्रि स र्द स ॥ ॥ ॐ न नु ति त्या दि ॥ व ज कृ म न

उना वत्र धर्माः दिहृजं क मूखं उग्रानवा म नत्र क ता वृसः ग क
याम वाम धम ग ल्या व क य म ध ल्या क न धम न मू ड ध म व र्ज विरा
व ॥ ख रु हि ता दि ॥ पा ॥ आ ॥ य ध्य न्या म ३ ॥ ॥ उं ध म्म व र्ज
१०८ ॥ य ध्य ॥ ना म्या ॥ य ॥ वा ॥ इ न्ति ॥ ॥ के न न ॥ उं ध म्म ना
जा ॥ मि ना रा य ॥ का नि सू र्ज पु रा मि न ॥ सू र्वा व नि यु नि था य व र्ज
ध म्म न म न्ते न ॥ ॥ व त्रि ॥ य व र्ज ॥ ॥ न ना ॥ भा द्य सि धि ॥

उं उ न्ति ल्या दि ॥ न इ व नि ग न्दा य त्रि वि स्था कृ ष्ठ व न्द मं लु
अ ॥ का न र्ज वि स्त व र्ज मं ज्ञा न ॥ अ भा द्य सि धि व र्ज य य क नि य लु
याम व र्ज सूर्य पु री म् न र्थ च वृ ध र ल्म म कृ ष्ठ म दि न र्ज ना वि न यि
न वि चि न र लो रा त ना व त्र ध र ॥ दि हृजं क मूखं स र्वा न वि स्त व र्ज
म धम ग ल्या ध ल्या रा य दाना लि न य न वाम मू कान मू सः ग म्मा य
य क म्म व र्ज वि रा व ॥ ख रु हि ता दि ॥ पा ॥ आ ॥ या या दि य ध्य

न्यास ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ईकर्मवज्रम् ॥ १०८ ॥ यं वा युः पूजायुति ॥

॥ ईकर्मवज्रमहावज्रसर्वकर्मयुसाधकः ॥ सर्वसिद्धियुक्तानाथ ॥
॥ मायसिद्धिनामा मुक्त ॥ ॥ वत्रि ॥ स्यमयवृत्तवत् ॥ ॥ दक्षिण
॥ वज्रवृत्तवत् ॥ नना वज्रनासाया ॥ ॥ एतन्निवृत्तवत् ॥ इत्यत्रिन
विस्वाकृ म् चन्द्रविम्बाहंकारत्रयवज्रद्वयसंज्ञनां सत्यययक निष
र्मासूर्ययरात्रलमकृदिनि विचित्रनन्नासना वत्रधत्रिद्विरु

॥ ईकर्मवज्रगवा म् दयालुतायां वज्रद्वयविभ्रतां वज्रनासा
विराव्य ॥ सहृदि ॥ ॥ या ॥ यूर्यन्यास ॥ ३ स्नानवा ॥ ॥ ई वज्रना
स्यम् ॥ १०८ ॥ यं ॥ नासायुति ॥ ॥ ई वज्रनास्य महा नास्य स
वत्रिन्नायदसकिः ॥ सर्वताववृत्तनास्य ॥ नासा वज्रनममुक्त ॥
वत्रि ॥ स्यमयवृत्तवत् ॥ ॥ य ॥ यक्लिप्त ॥ वज्र ॥ ॥ भूयवृत्त ॥
एतन्निवृत्तयत्रिनन्त विस्वाकृ चन्द्रविम्बाहंकारत्रयवज्रद्वयसंज्ञनां सत्यययक निष

रुतां सत्त्वययक निषना सिनवर्कसूर्ययरां प्रत्नमकुटिनिवि
विनत्रत्नारात्रना वत्रधत्रिदिरुक्तं कमसंरुतात्या धूपककु
ध्रिनिनवजधूपां विलावा ॥ स्वहृदि ॥ ॥ या ॥ पूर्यन्मास ॥ स्थान
वाय ॥ ॐ वज्रधूपार्ह ॥ १०६ ॥ व ॥ पूजाकुली ॥ ॥ ॐ वज्रधूपास
नाधूपासवत्राकेयुधूयिताः सवसुगन्धयुक्तागधूपवज्ञानसाम्य
हं ॥ वत्रि ॥ स्वययवत् ॥ क ॥ पूववास वजाकृत् ॥ ॥ उरुति

वंगइयत्रिविस्वाकूचन्दविभ्रजकात्रजांकमसंरुतंसत्त्वययक
निषना सिनवर्कसूर्ययरां प्रत्नमकुटिनिवि विनत्रत्नारात्र
ध्रिनिनवजधूपां विलावा ॥ स्वहृदि ॥ ॥ या ॥ पूर्यन्मास ॥ ॥ ॐ वजाकृत्सज ॥
१०६ ॥ ग्रास्या ॥ गुति ॥ ॥ ॐ वजाकृत्समाविर्दयुमास्वमदक
॥ सवसुगन्धयुक्तागधूपवज्ञानसाम्य ॥ ॥ वत्रि ॥ स्वययवत् ॥

८ ॥ दक्षिण ॥ वरुणास ॥ ॥ उं वरुणास ॥ न इयत्रिविस्वाकु ॥
चन्द्रकान्तवरासमंज्ञानं ॥ सन्वयकर्मणि नं ॥ यिनवल्गुसु
र्ययुक्तं नलमकु निनिविचिनत्रला रत्रनास्वत्रधरं ॥ द्विरुयन्त्र
कमूयंरुजाया वासधरं वरुणासविताय ॥ स्वहृदि ॥ या ॥ पूर्व
न्यास ॥ लयू ॥ ॥ उं वरुणासहं ॥ १०८ ॥ यं ॥ युजा नृति ॥
उं वरुणासमहा वासं रनयानयमागर्क ॥ सुवसुक्तसदावर्द्धवित्र

वासं नमामाहं ॥ ॥ वरि ॥ युव ननु ॥ ७ ॥ दक्षिण ॥ वरुणास ॥
॥ उं वरुणास ॥ न इयत्रिविस्वाकु चन्द्रविम्बवकात्रजसिखरा
निधानं सन्वयकर्मणि नं ॥ नकु वल्गुसूर्ययुक्तं नलमकु निन
विचिनत्रला रत्रनावरधरं ॥ द्विरुक्तं कमूयं कत्राया वरुणि
स्वराधरं वरुणासविताय ॥ स्वहृदि ॥ ॥ या ॥ पूर्व न्यास ॥
स्नानवाय ॥ ॥ उं वरुणासहं ॥ १०८ ॥ यु ॥ नाया नृति ॥

ॐ वज्र ह्रीं कलि ह्रीं नागमा नातर्क्युः स्वस्व कुवर्तं ह्रीं
ह्रीं नमः ॥ १० ॥ ॐ गुणः चक्र ॥ ॐ कृतिर्वै नदयत्रि विस्वा
कचन्द्र विम्बः ॥ काका नजवजा कितः चक्रा संलूनं सख्युयैकः
निर्लु सूर्य पुरं नल्लमकुनिन विविन नला ननानि वल्ल
॥ ॥ दिग्न कसूर्य वजा वस विराच ॥ खरुदि ॥ पा ॥ ज्येष्ठ ॥ य
स्थानवाय ॥ ॥ ॐ वजां वसहा ॥ १०६ ॥ य ॥ यूनः स्यादुनि ॥

॥ ॐ वजा वस माहा वस्यः सर्वस धर्म प्रवसाकः ॥ ऊरु साजान
क विर्ल वजा वस्य नमः ॥ ॥ वत्रिः सर्व पूर्व ॥
॥ ॐ गुल वज्रक ॥ कृतिर्वै नदयत्रि विस्वा कचन्द्र विम्बः
काका नजवजा कदं क्रायू गनिद्या नै सख्युयैक मिषल्ल क सुव
ल्ल सूर्य पुरं नल्लमकुनिन विविन नला ननानि वल्ल दि
रुग्न कसूर्य रुजाया वज्रदं गुदयं सम्वक्ष पुद्वानु मय

नं वरुयं कृ विता वा ॥ स्व हृदि ॥ वरु स ३ संयून ॥ स्नान वाय ॥
॥ ॐ वरुयं कृ हं ॥ १०७ ॥ यः युजा नृति ॥ ॥ ॐ वरुय
कृ महायं कृ सर्वयं कृ युधानका सर्व वि विद्यु गनं धर्मं यं कृ व
जनमानुक्त ॥ ॥ वरि स्य ययुव ॥ १२ ॥ ॥ ॐ नृनया ॥ यू
व ॥ ॥ ॐ नृति नृ वं ॥ त इय त्रिगुण य इति दं वि स्या कृ व नृ वि
स्य ॐ का नृ नृ स रं गृ लं त्रि ना स न रं या त व रं न त म कृ ति न वि वि त

नृ नृ व न धर्मा ॥ दि रु रु क मू र्ध स व न व र क टि कृ वा म क म न व र
धर्मा त्री देव ना रं वि ता वा ॥ स्व हृदि ॥ ॥ या ॥ यू व न्या म ॥ स्नान वाय ॥
॥ ॐ आ रं नृ ना य न म स्ना हा ॥ ॥ युजा नृति ॥ ॥ ॐ देव ना रं
स रं ना यू वं दि रु यु ति मि त न मा मि स न रं वि त रं व रं ना क ल कृ क
॥ वरि स्य ययुव ॥ ॥ ० ॥ मि व स क नि क लं स या न ॥
व र नृ ति य ॥ ॥ ॐ वरुयं कृ हं ॥ ॐ वरुयं कृ मा हा ल य ॥

सबुजकृ॥ शिवसकतिविरांघ्र॥ ॥ याद्यादियूयंन्यास॥
॥ ॐ वृजलकृ॥ शिवसकतिनमस्वाहा॥ ॥ पूजा
कृति॥ ० ॥ ॐ नमस्तुभ्यं सदायकं ॥ ॐ नमस्तुभ्यं सदायकं ॥
सर्वयतिथाय॥ शिवसकतिनमः॥ ॥ वरि॥ अकारम
य॥ ० ॥ मात्रसा॥ नाकयाल्लंकेसयात॥ धूय॥ जाय॥

पूजाकृति॥ ॥ कदाचिमात्रसा॥ दसकाधपूजा॥
धूय॥ जाय॥ ॥ यूप्यान्यास॥ य॥ पूजाकृति॥ ० ॥

जवस ॥	रजवस ॥	दंगु मधस ॥	कुस ॥	खवस ॥	धवस ॥	क
इन्द्रदेव	सिंदेव ॥	आयन ॥	देव	काहे देव ॥	यता ॥	थान ॥
विजकुस ॥	वैनाय ॥	मह	संवत ॥	आग	आविनि ॥	धुतिथयनधू
कात्र ॥	गवमात्राग ॥	स्वकन	म ॥	वृग ॥	चि	नडाव ॥
मन ॥	झसकन ॥	सि	मून	नवाहात्र ॥	प्रातद्य ॥	यैव गवेस्वधन ॥
					याचिनिस्वर्नयाकथ ॥	सुगरीदिज्ञावक ॥

थन ॥ गुरुमंलुत्र ॥ विस्वजन ॥ सिंधूत्रियूजा ॥ ग्रहस्य ॥ गिरु
 मावि ॥ ज्ञायधूनडाव ॥ थायनायाकयूजाधूनडाव ॥ थन ॥ द
 वयूजा ॥ ज्ञाय ॥ धूय ॥ ० ॥ याद्यादिवृष्यन्यास ॥ मधस ॥
 उँडाकिनियहंरुठ ॥ नमहंरुठ ॥ खंदत्राहायहंरुठ ॥ नूयि
 नियहंरुठ ॥ वृगकत्रातकहंरुठ ॥ समयकतूहंरुठ ॥ विम

मयकत्रागकईरुठ ॥ समयविमयकत्रागकईरुठ ॥ त्यादि ॥
० ॥ ॐ आर्यावत्रा कस्वराय स्वाहा ॥ आर्यवैत्राचनाय स्वाहा ॥
अक्षायाय स्वाहा ॥ अक्षरं वाय स्वाहा ॥ अमिता राय स्वाहा
॥ अमृद्यसिद्धीय स्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तप्रवृत्ता नृनि ॥ ॐ द्वि
कात्राज्ञानार्थ ॥ अमाद्यवार्त्तनामाना ॥ लोकनाथं नमामि ॥

ॐ नमः ॥ आचकर्मवत्राय ॥ सर्वरुद्रानसंदह ॥ अगदन्व
प्रसादक ॥ चित्तमन्त्रिप्रविरुत्त ॥ आसन्वर्त्तनमा नृन
॥ ॥ अक्षर ॥ दंगुनिदयान ॥ खानवाय ॥ ॐ आदिन्याय
स्वाहा ॥ स्वमाय स्वाहा ॥ अंग्रनाय स्वाहा ॥ वृक्षय स्वाहा ॥ वृ
ह्युतिय स्वाहा ॥ सुक्रनाय स्वाहा ॥ सनिचत्राय स्वाहा ॥

त्राहवस्वाहा ॥ शान्तिकृत्यस्वाहा ॥ कर्मनरु नरं स्वा
हा ॥ ॥ शिवसं ॥ इन्द्रायान् ॥ स्नानवाय ॥ ॐ नमो
योगमन्त्रायस्वाहा ॥ ग्राह्यान्ताकिनियस्वाहा ॥ ग्राह्य
क्रात्यायस्वायस्वाहा ॥ हवज्जाकिनियस्वाहा ॥ कृत्र्या
त्राकिनियस्वाहा ॥ यूर्वनात्राकिनियस्वाहा ॥ हव

ताकिनियस्वाहा ॥ त्यादि ॥ ॥ यथायुक्तप्रयुक्तानुति ॥
० ॥ शिवसं ॥ क्राह्यान्ता ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ॐ हवज्जा
त्रिनमस्वाहा ॥ नरुवन्दुनैत्रवायनमस्वाहा ॥ वक्रमात्रि
यिनितमस्वाहा ॥ वक्रवन्दनमस्वाहा ॥ मय्यात्रनागत्रा
यनमस्वाहा ॥ ॥ यथायुक्तप्रयुक्तानुति ॥ ॥ शिवसं ॥

गंनं स्यात् ॥ खानवाय ॥ ॥ ॐ गंतं स्वामयस्वनाय स्वाहा ॥
गनाधियुतं यस्वाहा ॥ गनयुति युक्तिताय स्वाहा ॥ त्यादि ॥
॥ यवायुहात्रयूता नृति ॥ ॥ यनः कंतन ॥ ॐ सु
रुस्वभामहि युतं वृधदवगुत्तुसिग्ग ॥ सनिचत्रग्रहा
रु ॥ कदुरुर्मनमादुतं ॥ ॥ ॐ नमाग्नायागमधियुस्त्वमा

वक ॥ नमागुस्त्रासुत्तु ॥ कसावक्त ॥ नमागुस्त्रागानवमाहा
कुदक ॥ नमागुत्तु ॥ यागमम्वर्त्त ॥ ॥ ॐ कामात्रिभक्तना ॥ व
कात्रिभक्तुर्ज्ञातं ॥ स्वायूक्ताविद्वयार्त्तव ॥ नमागुत्तुमयुत्तुवपुनि ॥
॥ ॐ नमग्नाविद्वुस्त्राय ॥ हवूयत्रमदव ॥ कागुत्तुसिधिवि
नायक ॥ त्यादि ॥ ॥ समय ॥ थ ॥ मम ॥ र्यवमा ॥ ० ॥

थन ॥ कृष्णयूगा ॥ धूय ॥ ज्ञाय ॥ खानवाय ॥ ॥ उंथाग
मन्त्राय स्वाहा ॥ हानताकि निय स्वाहा ॥ त्यादि ॥ ॥ उंका
मात्रिममा स्वाहा ॥ ॥ अयथा विवन ॥ उंताकि निय हूँ हूँ ॥
॥ यं वायुनात्र यूगा नृति ॥ उंथाग मन्त्राय ॥ त्यादि ॥
उंका मात्री लकवन ॥ त्यादि ॥ ॥ थन ॥ चक्रयूगा ॥ ०

थन ॥ वत्रिविय ॥ खाननन ॥ गुरुयूगा ॥ दक्रका ॥ दग्गति
समय ॥ विस्वजन ॥ कंसारिकक ॥ सिंधर ॥ मानि ॥ आग
ननस्य ॥ गुरुयतिनिन ॥ सकलति चक धूनडाव ॥
शङ्कुव ॥ आगननस्य ॥ हिरकं ॥ धूनडाव ॥ समचक्र ॥
धूनडाव ॥ विस्वजनयाय ॥ धूनडाव ॥ गनुरक ॥ ०

युनि ॥ यचिनिस्वनयाविधि ॥ कृष्णयूजाविय ॥ स्वनक
कृव ॥ थनकृकृव ॥ मान ॥ ॥
॥ ० ॥ थन ॥ वृक्षाकलसयान ॥ धूय ॥ ज्ञाय ॥ ध्यान ॥
ॐ वृक्षापिगवना ॥ हंसवाहनसंकिर्त ॥ दक्षिणार्धकृम
सूतच ॥ वायकर्मद्रुधर्ल ॥ ॥ शक ॥ खन ॥ याथादि ॥

स्वानवाय ॥ ॥ ॐ वृक्षायनिनमस्वाहा ॥ ॐ वृक्षनिलय
नमस्वाहा ॥ ॐ वृक्षाकायनमस्वाहा ॥ ॐ विष्णुदत्तायनम
स्वाहा ॥ ॥ यचिायरात्रयूजानुनि ॥ ॥ ॐ वृक्षनिपूष
सगमहा ॥ चक्रवादासुयगम ॥ कर्मलुल्लसूतच ॥ हंसानु
धनमल्लक ॥ ॥ वृक्षिदय ॥ ॥ थन ॥ सूतकलसया

न ॥ धूप ॥ जाय ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कु
लिंगमस्तनमासन ॥ निष्ठावत्रारयसूदा ॥ ध्यायमानकनवल्लय
॥ ॥ श्राकवन ॥ याद्यादि ॥ स्नानवाय ॥ ॥ ॐ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
हा ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
यात्रियच्छिकायनमस्वाहा ॥ ॐ देवाकनारायणाय नमस्वाहा ॥ ०

यन्त्राय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥ ॥ देवाय नमः ॥
स्तनमासन ॥ कुवत्रयइनय ॥ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
० ॥ धन ॥ चन्द्रकलमयान ॥ धूप ॥ जाय ॥ ध्यान ॥ ॥
चन्द्रमायि नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वर्कवल्लश्रययदा ॥ ॥ श्राकवन ॥ याद्यादि ॥ स्नानवाय ॥

ॐ चन्द्रमायनमस्वाहा ॥ ॐ चन्द्रनियनमस्वाहा ॥ ॐ स्यन
हंसायनमस्वाहा ॥ ॐ ॐॐ द्रव्यालियक्रिकायनमस्वाहा ॥ ॐ नि
साचक्रदत्तायनमस्वाहा ॥ ॥ यंचायुह्ययूशान्ति ॥ ॥
ॐ संस्कृद्रुमकारा ॥ हंसायनमस्वाहा ॥ ॐ कुरुद्रकलव
लंसावित्तिसानार्थनमामिहं ॥ ० ॥ अथन ॥ यिक्किविकल

स्यान ॥ धय ॥ जाय ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ यिक्किविविगवना
शा ॥ यम्मसंस्तिनमानं ॥ दहिनकनरुधित्वा ॥ वाम्यत्रुमिगु
याक ॥ ॥ अकवन ॥ याद्यादि ॥ स्यानवाय ॥ ॥ ॐ यि
थिद्यायनमस्वाहा ॥ ॐ अकमात्रियनमस्वाहा ॥ ॐ रुयाल
कायनमस्वाहा ॥ ॐ रुवनायनमस्वाहा ॥ ॥ यंचायुह्ययूशान्ति

यूगादिति । ॥ ॐ विष्णुविक्रमधर्षव ॥ अमिगसंज्ञनं ॥ स
वागकनकवनाहा ॥ यमामननमकुर्ता ॥ ० ॥ थन ॥ अ
सूत्रयाग ॥ ॥ धूप ॥ ज्ञाय ॥ ध्यान ॥ ॥ ॐ वेमचिगामत्रक
नाहा ॥ लथारियत्रिसंथागा ॥ दहिनवामरुद्रन ॥ स्वगुरुन
कध्मात्रिन ॥ ॥ अकधन ॥ वाद्यादि ॥ स्नानवाय ॥ ॥

ॐ अमूत्रायनमस्वाहा ॥ ॐ दंखवनियनमस्वाहा ॥ ॐ कृतालथ
यनमस्वाहा ॥ ॐ दनं ऊडवाययनमस्वाहा ॥ ॐ दानवदगा
यनमस्वाहा ॥ ॥ यथाप्रहात्रयूगादिति ॥ ॥ ॐ कृतास
नारुलसख ॥ स्वगुरुनकध्मात्रिन ॥ स्वामवनाममहाकाय ॥
व्यामचिगायननमा ॥ ० ॥ थन ॥ स्वयनागकलसयाग ॥

धूय ॥ ज्ञाय ॥ ध्यान ॥ ॥ उं श्यवनागमदुखालारा ॥ विष
वाधियूनकनारा ॥ कृताञ्जलिध्याययममासनमंथिन ॥
० ॥ आकषन ॥ याद्यादि ॥ खानवाय ॥ ॥ उं श्यवनागमन
मस्वाहा ॥ उं नागियनमस्वाहा ॥ उं यस्मायनमस्वाहा ॥ उं वि
षवलयात्रित्रायनमस्वाहा ॥ उं श्यवादिर्महात्रायनमस्वाहा

॥ ॥ वंचायुललयकानुति ॥ ॥ उं नागनागादुखवर्न
॥ कृताञ्जलिकनकधूर्त ॥ यमायत्रिममासिन ॥ श्यवनागमन
मदुर्क ॥ ॥ धन ॥ वृद्धिदय ॥ आरुनिविष ॥ ॥ उं
जस्मिनाल्वमाहाविल ॥ शिवासर्वसंयद ॥ शिवंथसिद्धिसंरा
ल ॥ सर्वस्वस्तिकलिकुनि ॥ जज्ञमानस्य ॥ ०० न्दादिनाकवा